بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 04.03.16 मस्जिद बैतुल फ़तूह,लंदन।

सम्बंध स्थापित करने के लिए भी ऐसी लोगों का चयन करना चाहिए जिनकी दीनी हालत अच्छी हो, जो नमाज़ों की नियमानुसार पाबन्दी करने वाले हों। इस संदर्भ में विशेष रूप से मैं रबवह और क़ादियान के अहमदियों को ध्यान दिलाना चाहता हूँ जहाँ थोड़े से क्षेत्र में अहमदियों की बड़ी संख्या है, इसी प्रकार मस्जिदें भी थोड़ी थोड़ी दूरी पर हैं वहाँ, कि मस्जिदों को आबाद करें।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछली कुछ अवधि में कई जुम्अः के ख़ुत्बों में मैंने कुछ कहावतें, वृत्तांत एंव कथाएँ जो शिक्षाप्रद हैं, जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बयान फ़रमाईं, बयान कीं। आज जब मैंने इन वृत्तांतों को चुना, बयान करने हेतु तो मुझे विचार आया कि हिन्द व पाक की इन पुरानी कथाओं एंव कहानियों में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाई हैं, इन कथाओं का आजतक जारी रहना भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा ही है। यदि जमाअत के लिट्रेचर में ये न होतीं तो ये कभी की कहीं दफ़्न हो चुकी होतीं तथा इस आधुनिक युग में इनको कोई भी न जानता। ये केवल कहानियाँ ही नहीं बल्कि कुछ वास्तविक घटनाएँ भी हैं, उपदेश भी दिए हुए हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने। कई अवसरों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ बातों की ओर ध्यान दिलाते हैं जो प्रत्यक्षतः चुटकुले हैं परन्तु इन चुटकुलों में से भी सुधार की शिक्षा हमारे सामने आप पेश फ़रमा देते हैं। इसी प्रकार का प्रत्यक्षतः एक चुटकुला है जो पेश करता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक मालन का उदाहरण बयान फ़रमाया करते थे। फ़रमाते कि उसकी दो लड़कियाँ थीं, एक कुम्हारों के घर ब्याही हुई थी तथा दूसरी मालियों के यहां। जब कभी बादत आता तो वह महिला पागलों की भांति घबराई हुई फिरती थी। लोग कहते कि क्या हो गया? वह कहती कि एक बेटी नहीं रही मेरी। क्यूँकि बारिश हो गई तो जो कुम्हारों के यहाँ ब्याही हुई है, वह नहीं रही, उनका कारोबार नष्ट हो जाएगा। और यदि वर्षा नहीं हुई तो जो मलियों के घर है, वह नहीं रहेगी क्यूँकि बारिश न होने के कारण उनकी सब्ज़ियाँ इत्यादि नहीं उगेंगी। तो यह उदाहरण देकर, प्रत्यक्ष में यह हल्की फुल्की बात है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उदाहरण इस विषय में बयान फ़रमाया है कि क़ादियान के दो व्यक्तियों का आपस में मतभेद हो गया। दोस्तों ने समझाया लेकिन दोनों ने यही कहा कि नहीं, हमने अंग्रेज़ी अदालत में जाना है, वहीं से निर्णय कराना है, और एक दूसरे पर सरकारी अदालत में मुक़दमा कर दिया। जब मुक़दमे की पेश हुई तो वे स्वयं अथवा उनका कोई प्रतिनिधि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में दुआ के लिए कहने आ जाता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि दोनों मेरे मुरीद हैं तथा उनके साथ सम्बंध भी है, किस के लिए दुआ करूँ कि वह हारे और वह जीते। मैं तो यही दुआ कर सकता हूँ कि जो सच्चा है वह जीत जाए। यह उचित तो है कि इंसाफ़ के लिए आदमी अदालत में जाए परन्तु यदि आपस में फ़ैसले दोस्तों के बीच हो सकते हों, मध्यस्तों के द्वारा समाधान निकल सकता हो, मिल बैठकर हो सकते हों तो अदालतों में भी नहीं जाना चाहिए तथा फिर ढ़िटाई भी नहीं दिखानी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस उदारहण को पसन्द नहीं फ़रमाया था। अतः यह हठ जो है, यह कोई अच्छी चीज़ नहीं है इस लिए इस ज़िद से भी बचना चाहिए और फिर दुआ के लिए कह कर, इमाम को भी दुविधा से बचाना चाहिए क्यूँकि यदि दोनों ही पक्ष अहमदी हों तो किस के लिए दुआ करे और किस के लिए न करे।

फिर अल्लाह तआला ने एक आदेश की ओर, एक बात की ओर हमें ध्यान दिलाया और वह यह है कि माता पिता

का मान सम्मान करना चाहिए। केवल दीन के अतिरिक्त, अल्लाह के आदेशों के अतिरिक्त, वालदैन का आज्ञा पालन करना चाहिए, उनके अधिकारों की पूर्ति करनी चाहिए। जब दीन का मामला आए तो निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि मैं आदर तो आपका करता हूँ परन्तु क्यूँकि ख़ुदा तआला का मामला है इस लिए यह बात मानना मेरे लिए कठिन है, मैं विवश हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि प्रत्येक इंसान का कर्त्तव्य है कि वह अपने माता पिता के साथ सुन्दर व्यवहार करे तथा उनके किसी ओदश की अवहेलना न करे। परन्तु बहुत से नौजवान ऐसे हैं जो अपने माँ बाप का उपयुक्त आदर नहीं करते तथा उनके अधिकारों का ध्यान नहीं रखते अपितु संतान में से यदि किसी को अच्छा ओहदा मिल जाए तो वह अपने निर्धन माता पिता से मिलने में भी लज्जा अनुभव करता है।

एक बार हज़रत मुस्लेह मौऊद यह विषय बयान फ़रमा रहे थे कि लोग कुछ आलिमों अथवा भाषण कर्ताओं के भाषण केवल अस्थाई आनन्द प्राप्ति के लिए आदत के कारण सुनते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस विषय में यही फ़रमाया हुआ है कि मज्लिसों में केवल इस लिए न आओ कि अमुक भाषण कर्ता अच्छा है उसका भाषण सुनना है बल्कि यह देखो कि इस मज्लिस में क्या वर्णन हो रहा है तथा उससे क्या लाभ प्राप्त किया जा सकता है। तो इस प्रकार कुछ लोग न तो भाषण कर्ता की गहराई को समझ रहे होते हैं, बात की गहराई को, न तक़रीर को समझ रहे होते हैं, न उसका उद्देश्य उनको समझ आ रहा होता है, केवल आनन्द प्राप्ति के लिए बैठे होते हैं। इसी प्रकार कुछ कुछ भाषण कर्ता भी केवल अस्थाई भावनात्मक अवस्था उत्पन्न करने के लिए बड़ा ज़ोरदार भाषण देते हैं अथवा देने का प्रयास करते हैं तथा बड़ी विभिन्न प्रकार की आवाज़ें निकालते हैं, करुणा भी प्रकट करने का प्रयत्न करते हैं, बनावटी प्रकार की। तो ऐसे ही एक सम्बोधन कर्ता का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक सम्बोधन कर्ता का वर्णन सुनाते थे कि वह लैक्चर के लिए खड़ा हुआ तथा उसका विषय बड़ा करुणामयी था। एक व्यक्ति आया और खड़ा हो गया। ज़मींदार आदमी था, हाथ में उसके तरंगड़ी थी। जितने लोग वहां बैठे थे उन पर तो उस भाषण का प्रभाव न हुआ परन्तु वह ज़मींदार थोड़ी देर बाद रोने लगा तो भाषण करने वाले ने सोचा कि यह मेरे भाषण से प्रभावित हो गया है। फिर उसने लोगों को बताने के लिए कि देखो कितना प्रभाव हुआ है उस पर, उससे पूछा कि मियाँ! किस बात ने तुमको प्रभावित किया कि तुम रो पड़े हो? वह कहने लगा कि कल इसी प्रकार मेरी भैंस का बच्चा अड़ा अड़ा कर मर गया था। तो जब मैंने आपकी आवाज़ें सुनी तो वह याद आ गया और मैं रो पड़ा। तो भाषण कर्ता बेचारे को जो बोधभ्रम हो गया था अपने सम्बोधन के विषय में कि सम्भवतः मेरा करुणा पूर्ण भाषण जो है यह, उसे सुनकर यह रो पड़ा है तो वह, उसके दिखावे ने उसकी बनावट ने तुरन्त दूर कर दिया। हमारे विरुद्ध जो मौलवी बोलते हैं यदि उनकी तक़रीरें सुनें कभी तो बिल्कुल इसी प्रकार की आवाज़ें आ रही होती हैं।

अल्लाह तआला का हम पर यह उपकार है कि हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ मिली अन्था इस्लाम के नाम पर पीरों ने भी जो दुकानदारियाँ चमकाई हुई हैं हम भी सम्भवतः उन्हीं का अंश होते। अतः क़ुरआन-ए-करीम पर चिन्तन एंव अनुध्यान करना चाहिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़सीरें पढ़नी चाहिएँ। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने भी तफ़सीरें लिक्खी हैं, वे पढ़नी चाहिएँ, ख़ुल्फ़ा की व्याख्याएँ हैं कुछ आयतों पर, तफ़सीर है, उनको देखना चाहिए। स्वयं चिन्तन करना चाहिए तथा क़ुरआन-ए-करीम से ही ज्ञान एंव विवेक के बिन्दु तलाश करने का हमें प्रयास करना चाहिए।

कुछ लोगों की धारणा होती है कि हमने ज्ञान प्राप्त कर लिया है तथा यह काफ़ी है और किसी चीज़ की हमें आवश्यकता नहीं, किसी अनुभव की हमें आवश्यकता नहीं, किसी दूसरे से विचार विमर्श की आवश्यकता नहीं, परन्तु यह आवश्यक है। यह बात याद रखने वाली है कि ज्ञान के साथ अनुभव की आवश्यकता होती है। यदि कोई व्यक्ति केवल किताब पढ़कर चिकित्सक बनना चाहे तो बड़ा कठिन है, बड़ा दुर्लभ है। आवश्यकता है, उदाहरणतः चिकित्सा की पुस्तकें हैं उनको पढ़ने के साथ ही योग्य चिकित्सक के सामने रोगियों का परीक्षण एंव उपचार किया हो। यदि एक चिकित्सक है, जब पुस्तकें पढ़ ले तो फिर किसी कुशल चिकित्सक के सामने रोगियों का परीक्षण एंव इलाज भी करता हो। इसी कारण से डाक्टरों को जब पढ़ाया जाता है कॉलिजों में तो उनके साथ साथ उनके प्रैक्टिकल भी हो रहे होते हैं कुशल डाक्टरों के

साथ। यदि यह न हो तो अनुभव प्राप्त नहीं होता तथा कुछ नहीं सीख सकता इंसान, परन्तु इसके उपरांत भी अनुसंधान आवश्यक होते हैं केवल इतना ही नहीं कि पढ़ाई के समय अनुभव प्राप्त कर लिया।

अतः किसी चिकित्सक की भी उसकी वैद्यिक शिक्षा तभी सम्पूर्ण होगी जब वह प्रयोग भी करेगा, बिना प्रयोग के विद्या लाभप्रद नहीं होती। एक अहमदी होकर ईमान की ऐसी अवस्था में सुरक्षा हो सकती है जब जमाअत के निज़ाम तथा ख़िलाफ़त के संग दृढ़ सम्बंध हो और इस सम्बंध के लिए उन साधनों को प्रयोग में लाने की आवश्यकता है जिनके द्वारा दूर बैठकर भी वह सम्बंध स्थापित रहे। हज़रत मुस्लेह मौऊद इस बात को बयान करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि जमाअती मामलों में लोग कभी प्रगति नहीं कर सकते, बल्कि कभी जीवित नहीं रह सकते जब तक कि उनका जड़ के साथ सम्बंध न हो और इस ज़माने में यह सम्बंध स्थापित रखने का उत्तम साधन समाचार पत्र हैं। इंसान किसी स्थान पर भी बैठा हुआ हो यदि इस सिलसिले के अख़बार पहुंचते रहें तो ऐसा ही होता जैसा पास बैठा है।

इस ज़माने में तो और भी आसानी है, अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमा दी है हमारे लिए। एक तो अपने प्रशिक्षण तथा ख़िलाफ़त से दृढ़ सम्बंध के लिए प्रत्येक अहमदी को एम टी ए सुनने की आवश्यकता है, इसकी आदत डालनी चाहिए। दूसरे तबलीग़ के लिए जो एम टी ए तथा वैब साईट प्रोग्राम हैं वे भी दूसरों को बताने चाहिएँ। अपने दोस्तों के साथ बैठकर कई बार अवसर मिलता है, देखने चाहिएँ, दोस्तों को इनका परिचय कराना चाहिए। बहुत सारे पत्र मुझे अभी भी आते हैं कि जब से हमने एम टी ए पर कम से कम ख़ुत्बात ही यथावत् सुनने आरम्भ किए हैं, हमारा जमाअत के साथ सम्बंध मज़बूत हो रहा है, हमारे ईमानों में दृढ़ता उत्पन्न हो रही है। अतः आजकल एम टी ए तथा इसी प्रकार **alislam** की वैब साईट, ये बड़ा अच्छा माध्यम हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तबलीग़ को भी पहुंचाने का साधन हैं तथा प्रत्येक अहमदी की तर्बियत और ख़िलाफ़त से जोड़ने का भी माध्यम हैं। अतः प्रत्येक अहमदी का कर्त्तव्य है कि इसके साथ जुड़ने का प्रयास करे।

कई लोग सोच तो यह रखते हैं कि उनका सुधार हो और इस्लाम के आदेशों का पालन करने वाले हैं। विशेष रूप से नमाज़ों के बारे में यह इच्छा रखते हैं कि यथावत् नमाज़ पढ़ने वाले हों परन्तु फिर ऐसी लोगों की संगत में चले जाते हैं जो सुस्त हैं तथा परिणाम स्वरूप ये लोग भी स्वयं सुस्त हो जाते हैं, इच्छा के बावजूद यह प्रभाव संवेदना के बिना पड़ रहा होता है। अतः सम्बंध बनाने के लिए भी ऐसे लोगों का चयन करना चाहिए जिनकी दीनी हालत अच्छी हो, जो नमाज़ों की नियमानुसार पाबन्दी करने वाले हों। इस संदर्भ में विशेष रूप से मैं रबवा और क़ादियान के अहमदियों को ध्यान दिलाना चाहता हूँ जहाँ थोड़े से क्षेत्र में अहमदियों की बड़ी संख्या है, इसी प्रकार मस्जिदें भी थोड़ी थोड़ी दूरी पर हैं वहाँ, कि मस्जिदों को आबाद करें। इसी प्रकार अनेक ऐसे लोग जो जमाअत के निज़ाम के विषय में अनुचित धारणा रखते हैं, उनसे भी बचने का प्रयत्न करें।

अतः सामान्य रूप से हर स्थान पर, प्रत्येक अहमदी को सुस्त लोगों से सम्बंध रखने की अपेक्षा चुस्त लोगों से, **active** लोगों से, जमाअत के सक्रिय लोगों से सम्पर्क रखना चाहिए, उनके साथ सम्बंध रखना चाहिए और जब यह सम्बंध स्थापित हो जाएगा तथा चुस्त लोगों की संख्या में वृद्धि होती जाएगी तो सुस्त भी फिर चुस्त हो जाएंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज्लिस में एक बार एक व्यक्ति आया, कहने लगा कि मैं चमत्कार देखना चाहता हूँ यदि मुझे अमुक चमत्कार दिखा दिया जाए तो मैं आप पर ईमान लाने के लिए तय्यार हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे उत्तर दिया कि अल्लाह तआला मदारी नहीं, वह कोई तमाशा नहीं दिखाता बल्कि प्रत्येक काम हिकमत से परिपूर्ण होता है। आप यह बताएँ कि जो चमतकार पहले दिखाए गए थे उनके द्वारा आपने क्या लाभ प्राप्त किया है कि आपके लिए अब कोई नवीन चमत्कार दिखाया जाए। अतः अल्लाह तआला इन बेहुदा मांगों को कोई महत्त्व नहीं देता तथा न ही उसके नबी देते थे। असंख्य निशान हैं, यदि मानना हो तो नेक प्रकृति लोगों के लिए वही पर्याप्त होते हैं

जब दुनया के काम परणिाम रहित नहीं होते तो किस प्रकार समझ लिया जाए कि नैतिक एंव आध्यात्मिक कार्य परिणाम रहित हो सकते हैं। अतः जहाँ तक परिश्रम एंव प्रयास का प्रश्न है, परिणाम हमारे ही अधिकार में हैं और यदि

परिणाम अच्छा नहीं निकलता तो समझ लो कि हमारे काम में कोई त्रूटि रह गई है। प्रयास करना चाहिए कि प्रत्येक क्रिया के परिणाम किसी निश्चित अवस्था में हमारे सामने आ सकें और जब तक ये परिणाम सामने न आऐं हमें विश्राम नहीं लेना चाहिए। कुछ लोग लिखते हैं कि हमने बड़ी इबादत की, बड़ी दुआएँ कीं, हमें उद्देश्य प्राप्त नहीं हो सके, हमारी दुआएँ स्वीकार नहीं हुईं तो उनको समझ लेना चाहिए कि या तो जिस स्तर तक जाना चाहिए, वहाँ तक नहीं पहुंचे या फिर लक्ष्य तो निश्चित कर लिया उन्होंने, परन्तु रास्ता ग़लत ले लिया। अतः इस पर एक दुआ करने वाले को विचार करना चाहिए कि रास्ता भी उचित हो और जितना परिश्रम करना चाहिए वह भी आवश्यक है। अतः आध्यात्मिक प्राप्ति तथा ख़ुदा तआला की निकटता और दुआओं की क़बूलियत के लिए भी अपने तरीक़े को देखने की आवश्यकता है, अपने सुधार की आवश्यकता है तथा उसके निरीक्षण की आवश्यकता है। किस प्रकार सुधार कर रहे हैं, अपनी मानसिकता को टटोलने की आवश्यकता है कि किस प्रकार के हमारे कर्म हैं, अपनी धारणाओं तथा मानसिकता के सुधार की आवश्यकता है। जब अल्लाह तआला ने कहा है कि मैं अपने बन्दों के निकट हूँ तथा उनकी दुआएँ सुनता हूँ और फिर वह यदि निकट नहीं आता, दुआएँ नहीं सुनी जातीं तो कहीं न कहीं किसी स्थान पर हमारे प्रयासों एंव स्थितियों में त्रूटि है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि भिक्षुक दो प्रकार के होते हैं, एक नर भिक्षुक दूसरा ख़र भिक्षुक। नर भिक्षुक वह होता है जो किसी के द्वार पर आकर आवाज़ देता है कि कुछ दो। यदि किसी ने कुछ डाल दिया तो ले लिया नहीं तो दो तीन आवाज़ें देकर आगे चले गए। परन्तु ख़र भिक्षुक वह होता है कि जब तक न मिले, टलता नहीं। तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि दुआ की क़बूलियत के लिए यह अनिवार्य है कि इंसान ख़र भिक्षुक बने और मांगता चला जाए और ख़ुदा के समक्ष धूनी रमा कर बैठ जाए और टले नहीं, जब तक कि ख़ुदा की प्रतिक्रिया यह प्रकट न कर दे कि अब इस बात के सम्बंध में दुआ न की जाए। परन्तु यह भी याद रखना चाहिए कि कभी युक्ति को भी नहीं छोड़ना, युक्ति भी दुआ के साथ आवश्यक है। युक्ति और दुआ निरन्तर करते रहना अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को खींचता है। युक्ति का दुआ के साथ होना भी बड़ा अनिवार्य है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि युक्ति (तबदीर) का दुआ के साथ न होना बिल्कुल ग़लत चीज़ है और ऐसे व्यक्ति की दुआ उसके मुंह पर मार दी जाती है जो केवल दुआ करता हो और तदबीर न करता हो, जो तदबीर और दुआ को साथ नहीं रखता उसकी दुआ नहीं सुनी जाती क्यूँकि दुआ के साथ युक्ति का न करना ख़ुदा तआला के क़ानून को तोड़ना है तथा उसकी परीक्षा लेना है और ख़ुदा तआला की यह शान नहीं कि बन्दे उसकी परीक्षा लें। अल्लाह तआला हमें निरन्तर अपनी अवस्थाओं को अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अनुसार बनाते हुए तथा समस्त प्रत्यक्ष नियमों को अपनाते हुए दुआओं का सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम क़मर ज़िया साहब पुत्र मुकर्रम मुहम्मद अली साहब निवासी कोट अब्दुल मालिक पाकिस्तान का सद्वर्णन फ़रमाया जिनको एक मार्च 2016 को विरोधियों ने शहीद कर दिया था। हुज़ूर-ए-अनवर ने मरहूम के सद्गुणों तथा सेवाओं का विस्तार के साथ वर्णन फ़रमाते हुए जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया।